भोपाल और कोटा मंडल में व्यवस्था लागू करने की तैयारी

स्टूडेंट ने बिना टिकट यात्रा की तो रेलवे लेगा स्कूल की 'क्लास'

रेलवे पहले नियमों के बारे में बताएगा... जबलपुर मंडल से हो चुकी है इस व्यवस्था की शुरुआत

दीपेश कौरव ▶▶ भोपाल

ट्रेनों में यदि बिना टिकट के सफर करते हुए स्टूडेंट्स मिला तो रेलवे स्कूल प्रबंधन की क्लास ले लेगा। इस व्यवस्था की शुरुआत जबलपुर मंडल से हो चुकी है। बहुत जल्द इसे पश्चिम रेलवे के भोपाल, कोटा मंडल में भी शुरू किया जाएगा। रेलवे इसे लागू करने से पहले स्कूली बच्चों को नियमों की जानकारी देगा। इसके लिए निजी स्कूलों की सूची तैयार की जा रही है। जहां रेलवे नियमों की जानकारी दी जाएगी। इसके बाद भी यदि बच्चे बिना टिकट सफर करते पाया गया तो फिर स्कूल प्रबंधन का नपना तय है। बता दें कि जबलपुर रेल मंडल ने स्कूली विद्यार्थियों को ट्रेनों में बिना टिकट सफर करने से रोकने की नई पहल शुरू की है। शुरुआत 100 स्कूलों को पत्र लिखकर समझाइश देने से शुरू की गई है।

अलग खबर

खास बातें

- आस-पास के क्षेत्रों से रोज भोपाल पढ़ने आते हैं बच्चे
- बिना टिकट, एमएसटी यात्रा करने पर छह माह की जेल

सीहोर, औबेदुल्लागंज से अप-डाउन करते हैं बच्चे

सीहोर, औबेदुल्लागंज सहित आसपास के स्टेशनों से स्कूल के बच्चे प्रतिदिन राजधानी पढ़ने के लिए आते हैं। इसके लिए वे एक्सप्रेस और पैसेंजर ट्रेन में बिना टिकट यात्रा करते हैं। इनके पास एमएसटी भी नहीं होती। कानूनी तौर पर बिना टिकट सफर अपराध है। ऐसा करने पर जुर्माने व छह माह की जेल की सजा का प्रावधान है। विद्यार्थियों के भविष्य और अपनी सामाजिक जिम्मेदारी को महसूस करते हुए रेलवे ने उन्हें सजा देने के बजाय उनमें जागरूकता लाने का बीड़ा उठाया है। इसलिए यह पहल शुरू की है।

तीन माध्यमों से रेलवे फैलाएगा जागरूकता

- स्कूलों को पत्र लिखकर नियमों की जानकारी देगा और उसका पालन कराए जाने का अनुरोध करेगा।
- इसे स्कूलों के सूचना पटल पर भी प्रदर्शित किया जाएगा, ताकि बच्चों तक यह जानकारी पहुंच सके।
- जरूरत पड़ने पर चिन्हित स्कूलों में वर्कशॉप भी आयोजित की जा सकती है।

जल्द लागू होगी

हमने बच्चों के भविष्य को ध्यान में रखते हुए इसकी शुरुआत की है। बच्चों में जागरूकता लाने के लिए जबलपुर के अलावा जल्द ही यह व्यवस्था पश्चिम मध्य रेलवे के सभी मंडल में भी शुरू होगी। इसको लेकर तैयारियां चल रही है।

प्रियंका दीक्षित, चीफ पर्सनल रिलेशन ऑफिसर (सीपीआरओ), पश्चिम मध्य रेलवे

पत्र में लिखा...300 से 1000 तक का जुर्माना लगेगा, जेल होगी और नौकरी भी नहीं लगेगी

जबलपुर रेल मंडल के कमर्शियल विभाग ने जो पत्र लिखा है उसमें कहा गया है कि स्कूल के लिए डेली अप डाउन करने वाले विद्यार्थियों की पहचान करें और उन्हें टिकट लेकर ट्रेन में सफर करने के लिए जागरूक करें। बताएं कि बिना टिकट सफर करने पर रेलवे 300 से 1000 तक का जुर्माना वसूलता है। जुर्माना नहीं देने वालों को छह माह की जेल भी हो सकती है। एक बार कार्रवाई हो जाने के बाद न तो विद्यार्थी का पुलिस वेरिफिकेशन होगा और न ही भविष्य में वह सरकारी नौकरी कर सकेगा।

अच्छी खबर | आदिवासी बच्चों के एक-एक किलो अनाज से बदल गई मिडिल स्कूल सुरवाही की तस्वीर

यू-ट्यूब व गूगल से बच्चे सीख रहे बांसुरी, खंजरी और ढोलक

गुनेश्वर सहारे • बालाघाट (नवदुनिया)

बालाघाट जिले से लगे कान्हा नेशनल पार्क वाले कॉरिडोर का ग्राम सुरवाही है। यहां शासकीय मिडिल स्कूल के आदिवासी बच्चों में पढ़ाई करने के साथ ही संगीत सीखने की भी बड़ी ललक है। वे संगीत कला में दक्ष होने अपने घर से एक-एक किलो अनाज जमा कर इसी पूंजी से स्कूल की पूरी तस्वीर बदल डाली है।

बच्चे संगीत सीखने खुद वाद्य यंत्र खरीदकर लाए हैं और मोबाइल पर यू-ट्यूब व गूगल की बदौलत रोजाना कक्षा में एक घंटे मंडली कर बांसुरी, ढोलक, मंजीरा व खंजरी का संगीत सीख रहे हैं। स्कूल के लगभग सैकड़ा भर बच्चों ने संगीत में आगे बढ़कर अपना जीवन संवारने का संकल्प लिया है।

बालाघाट के स्कूल में संगीत सीखते हुए छात्र। साथ में हैं प्राधानाध्यापक। • **नवदुनिया**

कार्ययोजना बनाकर अभिभावकों की 10 सदस्यीय टीम बनाई: बालाघाट से 116 किलोमीटर दूर सुरवाही गांव जनपद पंचायत बिरसा के शासकीय मिडिल स्कूल में वर्ष 2016 में प्रधानपाठक सुभाष कुमार बैस ने पदभार संभाला। उसके बाद निजी स्कूल की तर्ज पर बेहतर ढंग से शिक्षा दिलाने बच्चों को हर माह एक-एक किलो चावल घर से लाने की कार्ययोजना तैयार की। इसके लिए अभिभावकों की एक 10 सदस्यीय कमेटी बनवाई। माह में बच्चों द्वारा लाए हुए चावल को बेचकर हर माह 15 सौ रुपए जमा होते गए। जमा राशि से वाद्य यंत्र खरीदकर लाए, इसके अलावा अन्य कार्यों में खर्च करते हुए स्कूल की तस्वीर बदल डाली।

हर माह एक क्विंटल चावल जमा

प्रधानपाठक सुभाष कुमार बैस बताते हैं कि यह क्षेत्र आदिवासी होने से बच्चों को बेहतर शिक्षा देने के साथ साथ संगीत भी सिखाना था, अभिभावकों से चावल जमा करने की योजना बनाई। चावल जमा होने पर हर माह बेच देते थे। इन्ही पैसों से ढोलक, खंजरी, मंजीरा व बांसुरी खरीदकर लाए। बच्चों को संगीत सिखाने शिक्षक नही मिला जिससे मोबाइल पर यू-ट्यूब का उपयोग कर एक घंटे संगीत सिखाया जाता है।

बिरसा के सुरवाही की मिडिल स्कूल के बच्चों की सराहनीय पहल है। यहां के प्रधानपाठक व शिक्षकों का भी अच्छा सहयोग रहता है।

-पीके अंगुरे, डीपीसी बालाघाट